डीएवीवी की पहल : छात्र-स्टाफ-पालक करेंगे आर्थिक सहयोग, हर 6 महीने में होगा हिसाब

पैसों की तंगी से पढ़ाई छोड़ने वालों का सहारा बनेगी विवि की गुल्लक

पत्रिका सोशल प्राइड

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय अपने विभागों में पढ़ने वाले ऐसे होनहार छात्रों को संबल प्रदान करेगा, जिनके सामने पैसों की तंगी से पढ़ाई छोड़ने की नौबत आ गई। उन्हें विभाग के सहयोग से आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। हर विभाग में एक गुल्लक होगी, जिसमें छात्र व स्टाफ के साथ पालक भी इच्छानुसार राशि जमा कराएंगे।

विवि के स्कूल ऑफ कॉमर्स में गुल्लक योजना शुरू की जा चुकी है। कुलपति ने बाकी विभागों के लिए भी शुरू करने के निर्देश दिए हैं। गत दिनों राजभवन में हुई बैठक में कुलाधिपति लालजी टंडन ने आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की मदद के लिए व्यवस्था लागू करने पर जोर दिया था। खासतौर पर सामान्य वर्ग के छात्रों की मदद का उद्देश्य है।

आवेदनों की स्क्रूटनी

योजना के तहत आर्थिक लाभ पाने के लिए छात्रों को आवेदन करना होगा। स्क्रूटनी के बाद कमेटी राशि जारी करेगी।

प्रदेश में सबसे पहले देअविवि में यह योजना शुरू की गई है। इसके जरिए बड़ी राशि जुटाने की उम्मीद है। ये गुल्लक ऐसे स्थान पर रखी जाएगी, जिससे हर कोई आसानी से पैसे डाल सके। हर 6 महीने में इसे खोलकर राशि निकाली जाएगी।

प्रो. रेणु जैन, कुलपति डीएवीवी

यूटीडी के बाद ऑटोनोमस कॉलेजों में भी लागू होगा क्रेडिट सिस्टम

इंदौर. देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी (डीएवीवी) के विभागों में चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) की तरह अब ऑटोनोमस कॉलेजों में भी इसे लागू करने की तैयारी हो चुकी है। अगले सत्र से छात्र इसका लाभ उठा सकेंगे। इस सिस्टम के तहत छात्रों को अपने कोर्स के साथ किसी अन्य कोर्स के एक विषय को भी पढ़ने की सुविधा मिलेगी।

यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन (यूजीसी) कॉलेज और यूनिवर्सिटी में क्रेडिट सिस्टम लागू करने की सिफारिश कर चुका है। सीबीसीएस समान स्तर यानी यूजी कोर्स वालों के लिए यूजी विषय और पीजी कोर्स वालों के लिए पीजी विषय के लिए रहेगा। यूनिवर्सिटी में लागू सिस्टम के तहत 60 फीसदी कोर कोर्स रहता है। हर सेमेस्टर 20 क्रेडिट में से 10-12 क्रेडिट के कोर कोर्स रहते हैं। 4 से 6 के डिसिप्लिन सेंट्रिक रहते हैं। इसमें भी बच्चों को चॉइस दी जाती है। बाकी 3 से 4 क्रेडिट का जेनेरिक कोर्स होता है। इसके लिए वे किसी भी विभाग के कोर्स का चयन कर सकते हैं। हालांकि, क्रेडिट सिस्टम की जानकारी नहीं होने के कारण गिनती के ही विद्यार्थी इसमें दिलचस्पी दिखा रहे हैं। अब यूनिवर्सिटी की कोशिश है कि कॉलेजों में भी इसकी शुरुआत की जाए। ऑटोनोमस कॉलेज आसानी से क्रेडिट सिस्टम अपना सकते हैं।